पंचम अध्याय

'मनुष्य के रूप' उपन्यास की भाषा- शैली ।

पंचम अध्याय

'मनुष्य के रूप' उपन्यास की भाषा शैली ---

भाषा शैली --

भाषा --

'आत्मा और शरीर का अनिवार्य और अन्योन्याश्रित अटूट सम्बन्ध है। बिना शरीर के आत्मा का अस्तित्व नहीं और बिना आत्मा के शरीर ज्ञेय एवं मिट्टी है। उपन्यास में लेखक के भाव और विचार ही प्रधान है। इन भावविचारों को हम उपन्यास की आत्मा कहते हैं। किन्तु यह आत्मा बिना भाषा रूपी शरीर के अस्तित्व में नही आ सकती।'[१]

पाठक को लेखक एवं पात्रों के विचार समझाने के उपकरण के रूप में भाषा का प्रयोग उपन्यास में किया जाता है। भाषा का आकर्षण ही पाठक को उपन्यास पढने और उस में रूचि लेने को बाध्य करता है। भाषा को आकर्षक बनाने हेतु लेखक अलंकार, लोकोक्तियों आदि का प्रयोग करता है। भाषा में रोचकता एवं प्रभविष्णुता का होना अनिवार्य है।

यशपाल जी की रचनाओं के प्रेरणा स्त्रोत उनके पाठक रहे हैं। 'दिव्या' में उन्होंने इस तथ्य को स्वीकार किया है, 'सबसे अधिक आभारी हूँ मैं अपनी प्रेरणा के स्त्रोत पाठकों का जिसके बिना कला की साधना सम्भव नहीं'[२]

जिस रचनाकार के लिए उसका पाठक वर्ग ही प्रेरणा स्त्रोत हो उसकी

---

१ डॉ.गोपीनाथ तिवारी - ऐतिहासिक उपन्यास और उपन्यासकार -पृ.१४७।

२ डॉ.शान्तिस्वरुप गुप्त - यशपाल और उनकी दिव्या - पृ.१५४।

भाषा शैली भी ऐसी ही होगी जो उसके पाठक समुदाय को सहज ग्राह्य हो ।

' मनुष्य के रूप ' उपन्यास में पहाडी भाषा का प्रयोग किया गया है । स्थान स्थान पर काव्यात्मक एवं अलंकृत भाषा का प्रयोग कर यशपाल ने अपनी भाषा संपन्नता का परिचय दिया है । यशपाल ने अधिकांश उपन्यासों की भाषा काम-काजी, सरल और स्पष्ट है । उस में न ही जादात्तर काव्यत्मकता है, न ही व्यंजकता ।

लेखक के भाषा वैचित्र्य को इस प्रकार विभाजित किया जा सकता है, जिससे रूप भेद समझने में आसानी हो ।

भाषा के विभिन्न रूप --

प्रकार की दृष्टिसे लेखक ने अपने उपन्यासों में सामान्य भाषा, उर्दू प्रधान भाषा अभिजात्य वर्ग की भाषा, मिश्रित भाषा तथा लोकभाषा जैसे रूप को अपनाया दिखाई देता है ।

यशपाल जी एक क्रांतिकारी व्यक्ति थे । लेखक ने अपने उपन्यासों में भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन का उल्लेख किया है । लेखक ने इसके लिए शिक्षित पात्रोंका निर्माण किया है ।

प्रदेश विशेष को लेकर जो पात्र उपन्यास में निर्मित हुए है, उससे उपन्यास में स्वाभाविकता के साथ रोचकता आयी है । ' मनुष्य के रूप ' उपन्यास में सोमा पहाडन की भाषा इस संदर्भ में उल्लेखनीय है ।

यशपाल जी ने देशकाल के अनुरूप भी भाषा का प्रयोग कर स्वभाविकता की रक्षा की है ।

यशपाल जी अपने उपन्यासों में जिस प्रदेश का वर्णन करते थे, उस प्रदेश की भाषा, संस्कृति, परिस्थिति का गहरा अध्ययन और अध्यापन करते थे ।

'लेखक की भाषा सरल बोलचाल की है लेकिन जहाँ सिध्दांत प्रतिपादन है वहाँ उनकी भाषा प्रौढ और गम्भीर सी जान पडती है। पात्रों के अनुसार भाषा में परिवर्तन नजर आता है।'[१] धनसिंह की भाषा व्यवहारी खडी बोली है,जिस में उर्दू,फारसी शब्दों के साथ पहाडी बोली का प्रभाव स्पष्ट निखर आता है। भूषण प्रवक्ता है,शिक्षित है,उसकी भाषा में पर्याप्त गम्भीरता है। यही संकेत नारी पात्रों में सोमा और मनोरमा के बीच होनेवाले संवाद की भाषा भिन्नता से भी मिलता है। स्थान स्थान पर मुहावरों और कहावतों का प्रयोग भाषा में सौन्दर्य प्रतिपादीत करता है। 'माँ-बाप ने तो अपने टके सीधे कर लिये। उनकी बला से,बछिया कसाई के हाथ पडे तो और ब्राह्मण के हाथ पडे तो, अपने भाग्य से।'[२]

भाषा सौन्दर्य --

यशपाल जी ने अपने उपन्यासों में एक ओर देशकाल और परिस्थिति के अनुसार भाषा का प्रयोग किया है, जिससे भाषा में स्वभाविकता और विश्वसनीयता जान पडती है। वहाँ दूसरी ओर मुहावरों,कहावतों,सूक्तियों तथा अलंकृत वाक्य रचना व्दारा भाषा में लालित्य,मधुरता एवं काव्यात्मकता उत्पन्न की है।

उपन्यास की ऐतिहासिक तथा कलागत संस्कृत भाषा का ध्यान रखकर यशपाल ने 'सौ सुनार की एक लुहार की' की जगह 'सौ स्वर्णकार की एक लौहार की' का प्रयोग करते हैं। पाठक लेखक की सार्तकता की प्रशंसा किये बगैर नहीं रहते।'[३]

पाठक को लेखक एवं पात्रों के विचार समझाने के उपकरण के रूप में भाषा का उपन्यास में प्रयोग किया जाता है। कभी कभी ऐसा भी होता है कि

---

१ डॉ.सुनीलकुमार लवटे - यशपाल व्यक्तित्व एवं कृतित्व - पृ.१७६।

२ यशपाल - मनुष्य के रूप - पृ.१०।

३ डॉ.सुनीलकुमार लवटे - यशपाल एक समग्र मूल्यांकन - पृ.१२८।

उपन्यास के अन्य तत्वों के उचित निर्वाह के बावजूद यदि भाषा में मिठास या सुबोध ना हो तो उपन्यास असफल हो जाता है। सफल उपन्यास वही है जिस की भाषा में रोचकता हो, मिठास हो। यशपाल जी की चित्रात्मक शैली अत्यन्त प्रभावपूर्ण आकर्षक और समर्थ है।

यशपाल का शब्द-चयन बहुत विस्तृत और समृध्द ज्ञान का परिचायक है। यशपाल जी अपनी कल्पना में पात्रों से इतना करीबी संबंध प्रास्थापित कर लेते कि वे उन्ही की भाषा बोलने लगे।

'यशपाल मार्क्सवादी लेखक है,इसलिये उनका ध्यान भाषा को सहज और सरस बनाने के साथ साथ यथार्थ और व्यवहारिक रूप देने की ओर अधिक रहा है,इसीलिये, उनकी अलंकृत शब्दावली वस्तु-जगत से ग्रहण की हुई है,उसमें लेखक की कपोल कल्पना या वायावी उडान नहीं है,उसमें चमत्कार नहीं है, केवल यथार्थ रूप में भावों की प्रेषणीयता है।'[१]

लेखक ने भाषा की दृष्टि से पर्याप्त रूप अपनाया है। विभिन्न जाति के पात्र यथा,पहाडी,मुसलमान,अंग्रेजी ,पंजाबी,जब अपनी अपनी भाषा में बोलते है,तो कृति में सौन्दर्य की वृध्दि के साथ साथ रोचकता और व्यावहारिकता का समावेश हो जाता है। यशपाल अपने साहित्य में खडीबोली का प्रयोग करते है, लेकिन विभिन्न भाषाओं के सम्मिश्रण ने उनकी भाषा को जो रूप प्रदान किया है उससे वह जनजीवन के अधिक निकट आ जाती है।

यशपाल की औपन्यासिक भाषा का सबसे बडा आकर्षण उसके यथार्थवादी अभिव्यक्तिकरण में है। वह चाहे मानसिक यथार्थ को लेकर चले,अथवा बाह्य यथार्थ को। 'उसमें शब्दों का संयोजन इस ढंग से करते है कि एक भी शब्द इधर से उधर नहीं किया जा सकता।'[२]

---

१ डॉ.सरोज गुप्त - यशपाल व्यक्तित्व और कृतित्व - पृ.२८८।

२ डॉ.सुनीलकुमार लवटे - यशपाल एक समग्र मूल्यांकन - पृ.१२८।

हम यह विश्वास के साथ कह सकते है कि मतवादी आग्रह होते हुए भी यशपाल जी के साहित्य में शाश्वत तत्वों का अभाव नहीं । 'यशपाल की कला का अमर होने का सबसे बडा प्रमाण है अन्य भाषाओं में उनका अनुवाद और स्वागत'।[१]

शैली --

उपन्यासकार जब उपन्यास लिखता है तो वह पहले ही सोच लेता है कि मैं अपने उपन्यास में किस प्रकार की शैली का प्रयोग करूँगा । 'शैली उपन्यास लिखने का ढंग है । शैली अभ्यास गम्य है । उपन्यासकार जब बराबर लिखता रहता है तो उसकी लेखनी एक विशेष दिशा पकड लेती है और यही शैली है ।'[२]

शैली लेखक के भावों विचारों की अभिव्यक्ति का एक अच्छा माध्यम है । उपन्यासकार दिल में किसी उपन्यास की रचना करने से पहले जिस कथा का बीज निर्मित करता है उस निर्मिती को ही शैली कहा जा सकता है । अपने मन में प्रस्फुटित कथाबीज को अलंकार,मुहावरें, कहावतें,वाक्य रचना आदि का सुन्दर समायोजन कर शैली को विशिष्ट रूप प्रदान करता है । उपन्यास लेखक की अनुभूतियों की मार्मिक अभिव्यक्ति है । यह शिक्षा एवं मनोरंजन प्रदान करने के साथ-साथ साहित्यिक शैली में लिखा गद्यात्मक आख्यान है ।

भाषा,भाव और कल्पना के व्दारा कथानक की सुषमा बढानेवाला तत्व शैली है,जिससे पाठक आकृष्ट हो और कुछ देर के लिए उपन्यास की कथा में इतने एकाग्र हो जाये कि, इस उपन्यास के कथाबीज में खुद को ढाल ले, कुछ अवधि के लिए खुद को भूल जाये ।

विव्दानों का कथन है -'शैली ही व्यक्तित्व है ।'[३]

---

१ डॉ.सुदर्शन मल्होत्रा - यशपाल के उपन्यासों का मूल्यांकन - पृ.२१० ।

२ डॉ.गोपिनाथ तिवारी - ऐतिहासिक उपन्यास और उपन्यासकार -पृ.५३।

३ प्रो.प्रविण नायक - यशपाल का औपन्यासिक शिल्प - पृ.१४३ ।

यशपाल जी ने उपन्यासों में वर्णनात्मक,विश्लेषणात्मक, मनोविश्लेषणात्मक शैलीयों का प्रयोग किया है ।

सोमा के माध्यम से यशपाल ने विधवा नारी समस्या पर प्रकाश डाला है । भूषण और मनोरमा के संवाद के माध्यम से प्रेमविषयक सिध्दान्तों को प्रकट किया है । प्रेम की स्थिति में द्वंद्वात्मकता का स्वीकार उनके दर्शनपर होनेवाले द्वंद्वात्मक भौतिक वाद के प्रभाव को स्पष्ट करता है । यशपाल जी मानते है -- 'सब चीजों की तरह जीवन में प्रेम की गति भी द्वंद्वात्मक है ।' [१]

लेखक की सामाजिक प्रतिबध्दता के दायित्व का उचित निर्वाह हुआ है । समाज में पीडितो, दलितों के प्रति लेखक की करूणा आनेवाली पीढी को प्राप्त बडा वरदान है । समाज के कुत्सित,घिनौने,तिरस्कृत तथा अपमानित रूप का चित्रण ही लेखक का प्रधान उद्देश्य प्रतीत होता है । नारी की दयनीय स्थिति,उच्च तथा निम्नवर्गीय परिवारों में दमित यौन-भावना,संयुक्त परिवार की समस्या तथा सिने-जगत् की समस्याओं का चित्रण बडीही कुशलता से यथार्थ भूमि पर किया गया है ।

हास्य,व्यंग्य,वक्रोक्ति और आक्रोश यशपाल की भाषा शैली की एक अनन्य विशेषता है । जिसके प्रति यशपाल व्यंग्य करते हैं वह उससे कभी बच नही सकता ।

यशपाल में साहित्य सृजन की प्रतिभा जन्मजात ही थी ।

भाषा एक आर्जित गुण है । व्यक्ति अपने समाज से इसे अर्जित करता है । वह किसी भी समाज में जन्म लेता है,जहाँ उसका पालन पोषण होता है वही की भाषा में अपनी अभिव्यक्ति उसे सहज प्रतीत होती है ।

प्रत्येक भाषा का अपना जातीय संस्कार होता है जो यथार्थ तत्वों को ग्रहण कर रूप ग्रहण करती है । इसे हम यह भी कह सकते हैं कि, भाषा का वह

---

१ यशपाल - मनुष्य के रूप - पृ.८६ ।

रूप हमारा अपना हो । उसके साथ हमारा आत्मीय संबंध होना आवश्यक है । यही यशपाल का लक्ष्य है । शांतिप्रिय द्विवेदी जी ने कहा है, 'भाषा और शैली की दृष्टि से प्रेमचन्द ही नये युग में नया शरीर धारण कर पुन: सजीव उठे हों । यशपाल... प्रेमचन्द की तिरोहित प्रतिभा की तरूण शक्ति है ।' [१]

यशपाल ने अपने उपन्यासों की रचना अपने सिध्दान्तो को प्रमाणित करने के लिए की है । उन्होंने एक स्थानपर लिखा है,उपन्यास लिखने से मेरा अभिप्राय यह स्पष्ट करता है कि, 'मनुष्य समाज परम्परागत विचारधाराओं का दास नहीं है बल्कि वह अपनी विचारधाराओं का सृष्टा है । समाज के जीवन में प्राय: घटने वाली घटनाओं को उपन्यास के परीक्षण पत्र (Test Tube) में रखकर यह दिखाना चाहता हूँ किस प्रकार इन घटनाओं से हमारी विचारधारा में परिवर्तन आ जाता है या समाज के नए अनुभव कैसे नई विचारधारा को जन्म देते हैं ।' [२]

भाषा शैली वह साधन है, जिसके व्दारा लेखक अपने विचारों और भावों को सहृदयों तक प्रेषित करने में सफल होता है । उपन्यास की ही नहीं किसी भी साहित्य कृति की सफलता बहुत-कुछ उसकी भाषा शैली पर निर्भर करती है ।

'यशपाल के अपने सिध्दान्त और मान्यताएँ है, वे समाज में क्रांति लाकर इसे नवीन रूप देना चाहते हैं ।' [३]

लेखक की प्रवृत्ति संक्षिप्तीकरण की ओर रही है । इसी से उनकी भाषा शैली को प्रभाविष्णु बना दिया है । इस प्रकार यशपाल केवल सीधी-सपट और सरल भाषा का प्रयोग करनेवाले मार्क्सवादी लेखक थे ।

---

१ डॉ.शान्तिस्वरुप गुप्त - यशपाल और उनकी दिव्या - पृ.७ ।

२ वही पृ.९२ ।

३ डॉ.सुदर्शन मल्होत्रा - यशपाल के उपन्यासों का मूल्यांकन - पृ.२०५ ।

अंत में हम यही कहेंगे कि, 'यशपाल ने उपन्यास के विशाल कैनवस में बहुमाषी प्रयोगों से उपन्यास के रोचकता की श्रीवृध्दि ही की है।' [१]

---

१ डॉ.सुनीलकुमार लवटे - यशपाल एक समग्र मूल्यांकन - पृ.१२९ ।

निष्कर्ष

यशपाल जी के उपन्यास की भाषा प्रसाद गुण सम्पन्न, सरल और स्पष्ट है। उसमें काव्यात्मकता का न कोई प्रयोजन है न प्रयत्न। यशपाल जी की भाषा सर्वत्र कथ्य के अनुरुप है।

'भाषा तत्व उपन्यासों का मूर्त एवं भावों की उद्भावना करनेवाला पक्ष होता है। इसे ध्यान में रखकर यशपाल जी ने अपने उपन्यासों में रोचकता लाकर कौशलपूर्वक प्रयुक्त किया है। भाषा में बहुमुखी प्रतिभा का प्रयोग यशपाल के उपन्यासों की महान उपलब्धि है।

यशपाल जी के उपन्यासों की शिल्पविधि के आधारपर समग्र मूल्यांकन करने पर यह स्वीकार करना होगा कि, कला की कसौटी पर यशपाल जी का उपन्यास सफल सिध्द हुआ है।

उपन्यास साहित्य में यशपाल जी का योगदान महत्वपूर्ण है। यशपाल जी का समूचा उपन्यास साहित्य अनेक शिल्पगत मोतियों और उपलब्धियों को लेकर हिंदी साहित्य में प्रकट हुआ है। यशपाल जी के साहित्य लेखनी पर पाश्चात्य प्रभाव जादात्तर दृष्टिगत होता है।

निष्कर्षत: कहा जा सकता है कि यशपाल ने उपन्यास के विशाल कैनवास में बहुभाषी प्रयोगों से उपन्यास की रोचकता में वृध्दि की है। सामान्य उर्दू, अंग्रेजी, पहाडी, प्रचुर, आदि विभिन्न रूपों में भाषा तत्व की सृष्टि कर मुहावरें, कहावतें आदि के कुशल एवं समयानुकूल प्रयोग से उपन्यास की भाषागत सुषमा की निर्मिती की है। उर्दू, संस्कृत, अंग्रेजी, रूसी, कांगडा आदि देशी-विदेशी एवंम आँचलिक भाषाओं का प्रयोग लेखक के भाषा ज्ञान का ही परिचय देता है।

यशपाल जी के ' मनुष्य के रूप ' उपन्यास की मौलिकता जानने के उपरान्त यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि, यशपाल जी के साहित्य में मार्क्सवादी दृष्टिकोण की झलक मिलती है। यशपाल जी गम्भीर चिंतन के साथ ही साथ उपन्यास साहित्य के गहरे अध्येता भी थे।